स्वयं से संवाद

जे. कृष्णमूर्ति की शिक्षाओं के आलोक में जीवन का अन्वेषण

कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया जुलाई 2016

क्या अतीत की स्मृतियों से अछूती कोई जगह है?

यह एक नया दिन है और सूरज एक घंटे से पहले नहीं निकलेगा। काफ़ी अँधेरा है; पेड़ भोर के इंतज़ार में ख़ामोश खड़े हैं कि उन पहाड़ियों के उस पार से सूरज निकलेगा। भोर के लिये एक प्रार्थना होनी चाहिये। कितनी आहिस्ता से यह भोर आती है और सारे संसार पर छा जाती है। और यहाँ एक ऐकान्तिक घर है, संतरे के पेड़ों और कुछ फूलों से घिरा, असाधारण रूप से ख़ामोश सुबह का गीत गाने के लिये अभी तक पक्षी नहीं आये हैं। सारा संसार सो रहा है, संसार का यह हिस्सा तो ज़रूर ही... समूची सभ्यता से परे, समूचे शोर से, तमाम पाशविकता और राजनीतिज्ञों के बातूनी घटियापन से परे ख़ामोश।

बहुत धीरे...असीम धैर्य से, रात की गहरी ख़ामोशी से भोर उदित होती है और यह ख़ामोशी उल्लुओं के घुघुआने और फ़ाख्ता की उदास आवाज़ से टूटती है। इधर बहुत से उल्लू हैं जो एक-दूसरे को पुकार रहे हैं। पहाड़ और वृक्ष जाग रहे हैं। बेहद ख़ामोशी से भोर उदित होती है, और यह भोर उजली और उजली होती जा रही है। ओस पत्तों पर ठहरी है और सूरज बस अभी पहाड़ी पर चढ़ रहा है। सुबह की पहली किरण उन बड़े-बड़े वृक्षों पर पड़ती है और उस ओक पर भी पड़ती है जो वहां बहुत-बहुत लम्बे समय से है। और वह फ़ाख्ता अपनी कोमल और संतप्त आवाज़ में किसी को पुकार रही है। सड़क और संतरे के वृक्षों के उस पार मोर पुकार रहे हैं। संसार के इस हिस्से में भी मोर हैं, कम से कम कुछेक तो हैं। दिन की शुरुआत हो चुकी है।

यह एक अनोखा दिन है। एकदम नया और ताज़ा, जीवंत और बेहद खूबसूरत। अतीत की यादों से मुक्त...किसी और दिन को पुकारे बगैर...

इस सुन्दरता को देखना अद्‌भुत है...ये चमकीले संतरे गहरी पत्तियों और कुछ फूलों से सजे...अपनी महिमा से उज्ज्वलित। इस असाधारण उज्ज्वलता को देखकर हैरानी होती है जो लगता है संसार के सिर्फ़ इसी हिस्से

में नज़र आती है। इस सृजन का कोई ओर-छोर नहीं है। यह सृजन जो कुटिल विचारों से नहीं बल्कि इस नयी भोर के रूप में से उदित हो रहा है। ऐसी सुबह इसके पहले नहीं थी... इतनी उज्ज्वल, इतनी साफ़-नीली पहाड़ियां जैसे नीचे की तरफ़ देख रही हैं। यह नये दिन का सृजन है जो इसके पहले कभी नहीं हुआ।

यह लम्बी पूंछ वाली गिलहरी अपनी कई शाखें खो चुके इस पुराने 'पेप्पर' वृक्ष पर कूदती शर्माती कांप रही है। यह वृक्ष बहुत बूढ़ा होता जा रहा है, इसने न जाने कितने तूफ़ानों का सामना किया होगा। यह बहुत पुराना ओक का वृक्ष शांत और गरिमामय ढंग से तना खड़ा है। यह एक नयी सुबह है, बेहद प्राचीन जीवन से भरपूर...समय और समस्याओं से परे...यह तो बस है, इसका होना खुद में एक चमत्कार है। यह एक बिलकुल नयी सुबह है, यादों से मुक्त। पुराने दिन बीत चुके हैं और फ़ाख्ता की कूक घाटी के उस पार से आ रही है। अब सूरज पहाड़ों के ऊपर तक आ गया है और उसकी रौशनी सारी धरती पर फैल रही है। बीता हुआ कल कहीं नहीं है। इन वृक्षों और फूलों के पास समय नहीं है। यह एक नये दिन का चमत्कार है।

'हम निरंतरता चाहते हैं।' उस व्यक्ति ने कहा- 'निरंतरता हमारे जीवन का हिस्सा है। पीढ़ियों के बाद पीढ़ियां...परम्पराएं...वे चीज़ें जिन्हें हमने जाना और याद रखा है। हम निरंतरता के लिए हमेशा लालायित रहते हैं और यह हमें हर हाल में चाहिए होती है। नहीं तो हम हैं क्या? निरंतरता हमारे अस्तित्व की जड़ों में है। होना ही निरंतरता है। मृत्यु आ सकती है और बहुत सारी चीज़ों का अंत हो सकता है। पर निरंतरता बनी

पृष्ठ 3 से जारी...

ऋषिवैली में के.एफ.आई. गैदरिंग 2016

कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया का वार्षिक सम्मेलन इस साल ऋषिवैली स्कूल में 20 से 23 नवंबर के बीच आयोजित होगा। सहभागी 19 नवंबर को ऋषिवैली स्कूल पहुंच सकते हैं। गैदरिंग का समापन 23 नवंबर को दोपहर भोजन से पहले हो जाएगा। विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

Rishi Valley Education Centre
Chittoor District, Andhra Pradesh - 517352
Tel : 91-8571-280044/280086/280582/280622
Email : office@rishivalley.org

राजघाट स्टडी सेंटर में आयोजित स्टडी रिट्रीटः 2017

कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, राजघाट, वाराणसी में वर्ष 2016–2017 में आयोजित होने वाले स्टडी रिट्रीट का कार्यक्रम इस प्रकार है :

फरवरी 5–9, 2017
स्टडी रिट्रीट की थीम है "Understanding Fear and Pleasure"

अप्रैल 9–13, 2017
स्टडी रिट्रीट की थीम है "Awareness in Daily Living"

रजिस्ट्रेशन के लिए संपर्क करें :
कृष्णमूर्ति स्टडी सेंटर
राजघाट फोर्ट, वाराणसी 221001
ईमेल : kcentrevns@gmail.com
फोन : 0542–2441289

कृष्णमूर्ति वीडियो हिंदी सबटाइटल्स के साथ

1. Washington DC 1985 Talk 1 एवं Talk 2.
2. Love and Freedom: Turning Point Series Talk 6
3. Krishnamurti with Rishi Valley Students 1984 Talk 3
4. Why there is such a chaos in the world? Saanen1980

इन्हें मंगवाने के लिए संपर्क करें :
कृष्णमूर्ति स्टडी सेंटर, राजघाट फोर्ट, वाराणसी 221001,
ईमेल : kcentrevns@gmail.com
फोन : 0542–2441289

कृष्णमूर्ति से संबंधित वेबसाइट :
www.jkrishnamurtionline.org
www.kfionline.org
www.jkrishnamurti.org

हिंदी गैदरिंग : 1 से 4 नवम्बर 2016

कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, राजघाट, वाराणसी द्वारा कृष्णमूर्ति हिंदी गैदरिंग का आयोजन किया जा रहा है, सहभागियों का आगमन 1 नवम्बर की सुबह तथा प्रस्थान 4 नवम्बर को लंच के बाद होगा। विस्तृत जानकारी एवं पंजीकरण के लिए संपर्क करें :

कृष्णमूर्ति स्टडी सेंटर
राजघाट फोर्ट, वाराणसी 221001
ईमेल : kcentrevns@gmail.com
फोन : 0542–2441289

इंटरनैशनल रिट्रीट

कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, राजघाट, वाराणसी द्वारा 28 दिसंबर से 5 जनवरी 2017 तक एक अंतर्राष्ट्रीय रिट्रीट का आयोजन किया जा रहा है। थीम है : "The Quest for Truth"। विस्तृत जानकारी एवं पंजीकरण के लिए राजघाट स्टडी सेंटर के पते पर संपर्क करें ।

"मैं इस अनवधान को ध्यान से देख रहा हूं, और मुझे यह नज़र आता है कि अधिकांश समय मैं असावधान हूं, ध्यान नहीं दे रहा हूं। तो अब मैं एक समय में एक ही चीज़ पर ध्यान देने जा रहा हूं, मतलब यह कि जब मुझे चलना हो, जब मुझे खाना हो, तो मैं ध्यानपूर्वक चलने वाला हूं, ध्यानपूर्वक खाने वाला हूं। मैं किसी और चीज़ के बारे में नहीं सोचने जा रहा..."

– 'सत्य और यथार्थ' पुस्तक से

रहती है। हम अपनी जड़ों और अपनी पहचान की तरफ़ वापस मुड़ते हैं। अगर कोई अपने परिवार की शुरुआत का निशान खोजना चाहे तो वह सदियों तक की पीढ़ियों की जानकारी हासिल कर सकता है, अगर वह इस तरह की चीज़ों में रुचि रखता है। निरंतरता... ईश्वरीय पूजा-पाठ की, विधानों की... विचारधाराओं की, मतान्तरों की, मूल्यों की, निर्णयों की, निष्कर्षों की, निरंतरता उन सभी की जो भी हमें याद है, उस सबमें एक निरंतरता है। जन्म लेने के पल से लेकर मृत्यु तक एक निरंतरता हमारे साथ है। अपने सारे अनुभवों की...उस समस्त ज्ञान की जो मनुष्य ने हासिल किया है। क्या यह एक भ्रम है?'

निरंतरता किसकी? यह ओक का वृक्ष, जो शायद दो सौ साल पुराना है, इसकी निरंतरता तभी तक है जब तक यह खुद मर नहीं जाता या किसी व्यक्ति के द्वारा काट नहीं दिया जाता। और वह निरंतरता क्या है जो मनुष्य चाहता है? जिसकी लालसा करता है? नाम, रूप, बैंक एकाउंट, वह सब कुछ जो उसे याद है। स्मृति की एक निरंतरता है...जो होता रहा है उसकी याद। यह समूचा मनस् स्मृति के अलावा और क्या है? इस मन से हम और भी कई विशेषताएं जोड़ देते हैं... गुण, मूल्य, अधम कर्म, और चातुर्य के बहुत से कार्य, जिन्हें हम भीतरी और बाहरी संसार में अंजाम देते रहते हैं। और अगर कोई बहुत ध्यान से और मेहनत से इनका निरीक्षण करे, बिना किसी पक्षपात या निष्कर्ष के तो वह यह देख सकता है कि हमारा समूचा अस्तित्व स्मृतियों का एक विशाल तंत्र है...छूटी हुई निशानियों का और उन चीज़ों का जो पहले घटित हो चुकी हैं...इस सब की एक निरंतरता है... जिससे हम बहुत सख्त होकर चिपक जाते हैं।

गिलहरी लौट आई है...यह सिर्फ़ दो घंटों के लिए ओझल हो फिर शाख पर लौटी है...कुछ कुतरती हुई, देखती, सुनती, अतिरिक्त रूप से सावधान और सजग...उत्तेजना से कांपती हुई। किसी से कुछ कहे बिना आती और जाती। जैसे-जैसे दिन गर्म होता जा रहा है, वह फ़ाख्ता और पक्षी उड़ गये हैं। कुछ कबूतरों का झुंड एक जगह से दूसरी जगह उड़ रहा है। हवा में उनके परों की आवाज़ सुनी जा सकती है। यहाँ एक लोमड़ी आया करती है...पर एक लम्बे समय से वह दिखी नहीं है, शायद हमेशा के लिए कहीं चली गयी हो। यहाँ-वहाँ काफ़ी लोग हैं। यहाँ पर कई मूषक प्रजातियाँ है पर लोग ख़तरनाक हैं...और यह छोटी सी शर्मीली गिलहरी गौरैया की तरह स्वच्छंद है।

हालाँकि स्मृति के अलावा और कोई निरंतरता नहीं है...क्या समूचे मनुष्य में...दिमाग में कोई ऐसा स्थान है, कोई जगह, क्षेत्र, वह चाहे छोटा या बड़ा हो, जहाँ स्मृतियों का ज़रा भी अस्तित्व न हो? जिसे स्मृति ने कभी छुआ भी न हो? इन सब पर ध्यान देना एक विलक्षण बात है, स्वस्थ, तर्कसंगत ढंग से सोचना, महसूस करना, स्मृतियों की जटिलताओं, पेचीदगियों और उसकी निरंतरता को, जो कि जानकारी, ज्ञान की प्रक्रिया है, देखना। ज्ञान हमेशा अतीत में होता है। ज्ञान अतीत है। अतीत परम्पराओं की तरह विशाल संचित स्मृति है। और जब हम यह सब ध्यानपूर्वक, स्वस्थ मन से देख चुके होते हैं, हम निश्चय ही यह पूछ सकते हैं, क्या मनुष्य के मस्तिष्क या उसकी प्रकृति और उसकी संरचना में ऐसा कोई स्थान है, जो स्मृतियों का परिणाम नहीं है और न ही निरंतरता की गति है?

ये पहाड़, ये वृक्ष, ये चारागाह और ये उपवन निरंतर रहेंगे जब तक यह पृथ्वी है; बशर्ते मनुष्य अपनी निर्दयता-कठोरता और हताशा से इन्हें नष्ट ही न कर दे। यह झरना और वह स्रोत जहाँ से यह आता है, इनकी भी एक निरंतरता है पर कोई कभी यह नहीं पूछता कि ये पहाड़ और इन पहाड़ों के आगे जो भी है क्या इसकी भी कोई निरंतरता है...

अगर निरंतरता नहीं है तो वहां क्या है? फिर तो कुछ नहीं है। हम 'कुछ नहीं' होने से डरते हैं। कुछ नहीं मतलब 'कोई वस्तु' नहीं...ऐसा कुछ भी नहीं जो विचारों ने रचा हो, या स्मृतियों ने...कुछ भी ऐसा नहीं जिसे हम शब्दों में सँजो कर माप सकें... निश्चित ही कोई ऐसा क्षेत्र है, जहाँ अतीत की छाया तक नहीं पड़ती। जहाँ समय के किसी भी रूप का कोई मतलब नहीं है...चाहे वह अतीत हो या वर्तमान या भविष्य। हम हमेशा अपने शब्दों से उन्हें मापने की कोशिश करते हैं जिन्हें हम नहीं जानते। जो हम नहीं जानते, उसीको समझने की कोशिश में उसे शब्द देकर एक अंतहीन शोर में बदल देते हैं। और इस तरह अपने मस्तिष्क को भी अवरुद्ध कर देते हैं जो पहले ही माज़ी की घटनाओं, अनुभवों और ज्ञान से बहुत हद तक अवरुद्ध है। हम सोचते हैं ज्ञान का अपने आप में बहुत मनोवैज्ञानिक महत्त्व है। पर ऐसा नहीं है। हम ज्ञान का हाथ पकड़ कर आगे नहीं बढ़ सकते। नये अस्तित्व के लिए ज्ञान की समाप्ति बेहद आवश्यक है। 'नये' से हमारा तात्पर्य है, जो पहले कभी नहीं रहा। और वह क्षेत्र कुछ शब्दों या प्रतीकों से नहीं समझा या ग्रहण किया जा सकता। यह समस्त स्मरणों से परे है।

'कृष्णमूर्ति टु हिमसेल्फ' से

''जब आप इस तथ्य को देख लेते हैं कि कुछ भी ऐसा नहीं है जो सदा बना-टिका रहने वाला हो, तो वह देख लेना ही प्रज्ञा है, 'इंटेलीजेंस' है। और उस प्रज्ञा में संपूर्ण सुरक्षा विद्यमान होती है। यह आपकी प्रज्ञा अथवा मेरी प्रज्ञा नहीं है, यह तो बस प्रज्ञा है।''

-'मन क्या है?' पुस्तक से

क्या हम बिना हिंसा और युद्ध के शान्ति से नहीं जी सकते...?

पहाड़ियों के उस पार बहुत दूर नीचे एक चौड़ा-चमकता और झिल-मिलाता समन्दर दिखाई दे रहा था। हमने धरती के हिस्से कर दिये हैं, तुम्हारा देश, हमारा देश, तुम्हारा झंडा, हमारा झंडा, यह खास हमारा धर्म और वह दूर के उस व्यक्ति का धर्म। यह संसार, यह धरती टूट के बँट गयी है और इसके लिये हम लड़-झगड़ रहे हैं, इस धरती को इसकी सम्पूर्णता में देखे बगैर राजनेता बेहद हर्ष के साथ अपनी शक्ति का इस्तेमाल इस बँटवारे को कायम रखने में कर रहे हैं। उनके पास सार्वभौमिक मस्तिष्क नहीं है। वे उन विशाल संभावनाओं को कभी देख या महसूस नहीं कर पाते जहाँ न कोई राष्ट्रीयता है, न कोई विभाजन। और तो और, वे कभी अपनी शक्तियों की, अपनी पद-प्रतिष्ठा की, अपनी महत्ता के दंभ की कुरूपता भी नहीं देख पाते। वे आपकी या किसी और की तरह ही हैं। सिर्फ़ उन्होंने किसी तरह कुर्सी हासिल की हुई है, अपनी दयनीय छोटी-मोटी इच्छाओं और महत्त्वा-कांक्षाओं को पूरा करने के लिये। जब से मनुष्य इस धरती पर हैं उन्होंने ज़िन्दगी के प्रति यही कबीलाई रवैया कायम रखा है। उनके पास यह समझ ही नहीं होती कि इन मसलों, काल्पनिक आदर्शों, विचारधाराओं से परे जा सकें। एक ऐसा मस्तिष्क जो इस जातिवाद, संस्कृति और धर्मों के पार अपना कदम बढ़ा सके जो मनुष्यों ने मनुष्यों के बीच पैदा किये हैं।

सरकारें तब तक ज़रूरी हैं जब तक मनुष्य स्वयं में प्रकाश पैदा नहीं कर लेता, जब तक वह अपना रोज़मर्रा का जीवन व्यवस्था के साथ, सजगता के साथ, काम करने, अवलोकन करने और सीखने में नहीं लगाता। अभी तो वह वही करता है जो उसे करने को कहा जाता है। वह उस सबको मान लेता है जो सदियों से पंडित-पुजारी और गुरु कहते आये हैं और उसने उनका विचित्र विध्वंसक अनुशासन और आदेश स्वीकार कर लिया है, मानो इस धरती के वही ईश्वर हों, मानो वे इस असाधारण जटिल जीवन के सभी निहितार्थों से वाकिफ हों।

उन सभी पेड़ों से भी अधिक ऊँची इस चट्टान पर बैठे हुए, चट्टान, जिसकी पृथ्वी पर दूसरी जीवित चीज़ों की तरह अपनी एक आवाज़ है, साफ़-स्वच्छ और बेदाग नीले आसमान को हम देख रहे हैं। पता नहीं, मनुष्य को इस धरती पर झगड़ों, संघर्षों और युद्धों के बगैर जीने में अभी कितना वक्त और लगेगा। मनुष्य खुद इन संघर्षों को इस धरती पर अपने भाषायी, धार्मिक, जातीय और सांस्कृतिक भेदभाव से पैदा करता है। न जाने कितनी शताब्दियों से मनुष्य इस दुःख और तकलीफ़ से, चिंता और सुख से, डर और संघर्ष से गुज़रता आया है? और अभी उसे न जाने कितना वक्त और लगेगा एक अलग ढंग का जीवन जीने में...

हम बिलकुल खामोश बैठे हैं, एक बनबिलाव ऊपर से नीचे आया। घाटी के ऊपर बहती हवा के चलते उसे मानव गंध का पता नहीं चला। वह घुरघुरा रहा है, उसकी छोटी सी पूंछ ऊपर उठी हुई है। वह खुद को चट्टान से रगड़ रहा है और इस धरती के वैभव का आनंद उठा रहा है। फिर वह पहाड़ी में झाड़ियों के पीछे विलुप्त हो जाता है। अपनी कोटर में। जो इसके रहने, सोने की जगह है। जहाँ इसकी

''जब आप कहते हैं, 'मैं स्थायी खुशी की तलाश कर रहा हूं - ईश्वर, या सत्य, या कुछ और पाना चाहता हूं' - तो आपको उस खोज करने वाले को भी समझना होगा जो इस तलाश में लगा है। क्योंकि संभव है कि स्थायी सुरक्षा, स्थायी खुशी नाम की कोई चीज़ न हो। हो सकता है कि सत्य पूर्णतया भिन्न हो; और मुझे लगता है कि आप जो देखते हैं, सोचते हैं, प्रतिपादित करते हैं, सत्य उन सबसे पूर्णतया भिन्न है।''

- 'प्रथम और अंतिम मुक्ति' पुस्तक से

ज़रूरतें हैं, जहाँ इसके बच्चों की सुरक्षा है और जहाँ से वह अपनी तरफ़ आने वाले खतरों को सूंघ सकता है। मनुष्य से यह सबसे ज़्यादा डरता है। मनुष्य, जो ईश्वर पर भरोसा करता है, प्रार्थना करता है, संपत्ति और बंदूक के दम पर बेवजह हत्याएं करता है। गुज़रते हुए उस बनबिलाव की गंध हम महसूस कर सकते हैं। हम इतने शांत और स्थिर हैं कि वह हमें मुड़कर भी नहीं देखता। हम चट्टान और उस वातावरण के ही हिस्से हो गये हैं।

हैरानी की बात है कि आखिर मनुष्य यह क्यों नहीं अनुभव कर पा रहा कि वह बिना युद्ध के, बिना हिंसा के भी शान्ति से रह सकता है। यह स्वीकार करने में उसे और कितनी शताब्दियाँ लगेंगी? हज़ारों शताब्दियों के गुज़रने के बाद भी उसे यह बात समझ में नहीं आई है कि जो उसका आज है, वही उसका कल होगा।

यह चट्टान धीरे-धीरे गर्म होती जा रही है। हम अपनी पैंट को गर्म होता महसूस कर सकते हैं। हम उठते और नीचे आते हैं उस बनबिलाव के रास्ते पर जिसे ओझल हुए काफ़ी वक्त हो चुका है। वहां और भी प्राणी थे, धानीमूश, कोबरा और रैटल सांप जो चुपचाप अपना काम कर रहे थे। सुबह की ताज़ी हवा खो गयी है, धीरे-धीरे सूर्य पश्चिम की ओर जा रहा है। लगभग एक या दो घंटे में सूर्य उन पहाड़ियों के पीछे छिप जाएगा और वे अद्‌भुत पहाड़ियां शाम के नीले, लाल और पीले रंगों में चमकने लगेंगी। तब रात होनी शुरू होगी और उसकी आवाज़ हवा में भरने लगेगी। देर रात को घना सन्नाटा छा जाएगा। स्वर्ग की जड़ें इस गहरी शून्यता में हैं। और इस शून्यता में एक बेहिसाब, व्यापक और गहन ऊर्जा है।

'कृष्णमूर्ति टु हिमसेल्फ़' से

''देखिए, मैंने कभी किसी का आधिपत्य स्वीकार नहीं किया और न ही किसी पर अपने आधिपत्य का प्रयोग किया। मैं आपको एक मज़ेदार किस्सा सुनाता हूँ। मुसोलिनी के समय में उसके एक प्रमुख व्यक्ति ने मुझे लेक मजोरे के पास स्थित स्ट्रेसा में बोलने के लिए आमंत्रित किया (यह सन् 1933 की गर्मियों की बात थी)। जब मैंने हॉल में प्रवेश किया तो श्रोताओं में कार्डिनल, बिशप, जनरल वगैरह बैठे हुए थे। शायद उन्होंने सोचा हो कि मैं मुसोलिनी का मेहमान हूँ। मैं आधिपत्य के ऊपर बोला कि यह कितना घातक और विनाशक है। अगले दिन जब मैं फिर बोलने के लिए आया तो श्रोताओं में बस एक बूढ़ी महिला बैठी थी।''

-जे.कृष्णमूर्ति
('न्यूयार्क टाइम्स' 26 मार्च, 1974 को प्रकाशित एक इन्टरव्यू से)

क्या है सीखने के लिए?

''क्या यह कभी संभव है कि मन-मस्तिष्क पूरी तरह स्वतंत्र हो, हर प्रभाव, हर अनुभव और संचित ज्ञान से मुक्त?''

पिछले तीन महीनों से दिन-ब-दिन इस शीत ऋतु में भी पानी लगातार बरस रहा है। बल्कि यह केलिफोर्निया की एक अतिशयता है। या तो पानी बरसता ही नहीं, या पूरी धरती डूब जाती है। बहुत दिनों की आंधी के बाद ये कुछ धुपीले दिन हैं। कल सारा दिन पानी बरसता रहा और इस सुबह की घड़ी में बादल पहाड़ों के काफ़ी नीचे और उदास दिख रहे हैं। पत्तियों पर कल की बारिश की बहुत मार पड़ी है। समूची धरती गीली है। पेड़ और वह शानदार ओक अवश्य यही पूछ रहे हैं कि सूर्य कहाँ है।

गंभीर होने का क्या अर्थ है? एक बहुत शांत और गंभीर मन, या अगर आप कहना चाहें तो मस्तिष्क, होने का क्या अभिप्राय है? क्या हम कभी गंभीर होते हैं? या फिर हम हमेशा एक सतही संसार में आते-जाते, तुच्छ और बिल्कुल व्यर्थ की बातों पर लड़ते-झगड़ते और हिंसक होते रहते हैं? ऐसा मस्तिष्क होने का क्या अभिप्राय है जो चैतन्य है और जो सिर्फ़ अपने ही विचारों-स्मृतियों और स्मरणों तक सीमित नहीं है? जो जीवन की समस्त उथल-पुथल से, समस्त व्यथाओं से, चिंताओं और अंतहीन दुःख से स्वतंत्र है। क्या यह कभी संभव है कि मन-मस्तिष्क पूरी तरह स्वतंत्र हो, हर प्रभाव, हर अनुभव और संचित ज्ञान से मुक्त?

ज्ञान समय है। सीखना समय है। वायलन बजाना सीखना महीनों का अभ्यास और अनंत धैर्य मांगता है... सालों का समर्पण और एकाग्रता। किसी भी हुनर को अर्जित करना... एक खिलाड़ी बनने का कौशल हो या एक इंजन बनाने का काम या चाँद पर जाने की जद्दोजहद, हर कौशल समय मांगता है। पर क्या मनस् के विषय में, अपने बारे में कुछ जानने को है भी? समस्त उतार-चढ़ाव, किसी की प्रतिक्रियाओं और क्रियाओं के उलझाव, कर्म, उम्मीदें, असफलताएं, दुःख और खुशी...उस सबके बारे में सीखने को है क्या? जैसा कि हमने कहा भौतिक अस्तित्व के कुछ हिस्सों में ज्ञान संगृहीत करने और उसके आधार पर काम करने में समय की दरकार है। क्या हम इसी सिद्धांत को मनोवैज्ञानिक संसार में भी लागू कर देते हैं, समय की उसी गति का विस्तार अंदरूनी जगत में कर देते हैं? वहां भी हम कहते हैं कि हमें अपने बारे में जानने की सख्त जरूरत है... अपनी प्रतिक्रियाओं के बारे में, अपने व्यवहार, अपनी प्रफुल्लता, अपनी निराशाओं और अपने आदर्शों के बारे में जानने की। हम सोचते हैं कि इस सब के लिए भी समय की दरकार होती है।

कोई सीमितता की बाबत तो सीख सकता है, पर असीमितता के बारे में नहीं सीख सकता और हम मनस् की समग्रता के बारे में सीखने की कोशिश करते हैं यह कहते हुए कि यहाँ भी समय की दरकार है। पर हो सकता है समय इस क्षेत्र में एक भ्रान्ति हो। हो सकता है वह एक शत्रु हो। विचार भ्रांति की रचना करता है...ये भ्रान्ति विकसित हो फैलती जाती है। सारे धार्मिक क्रियाकलाप की भ्रांति की शुरूआत बहुत ही साधारण स्तर पर हुई होगी और अब देखिये वे कहाँ से कहाँ पहुँच गये हैं...अपनी विशाल ताकत के साथ...विशाल अधिकार और संपत्ति के साथ, कलाओं और सम्पत्ति को इकट्ठा करने, धार्मिक वर्गीकरण जो ज़्यादा से ज़्यादा आज्ञा-पालन और विश्वास की मांग करता है, यह सब भ्रांतियों की उपज और उसका विस्तार है जिसे बनने में सदियाँ लगी हैं। और मनस् जो समस्त चेतना का वाहक है, गुज़री हुई समस्त अतीत की मृत वस्तुओं की यादों से भरा है। हम यादों को बहुत महत्त्व देते हैं। मनस्

''भविष्य में आमूल परिवर्तन चाहने वाला या उस परिवर्तन को अंतिम लक्ष्य मानने वाला मन सत्य को नहीं पा सकता, क्योंकि सत्य क्षण-प्रतिक्षण पाया जाता है, हर पल नये सिरे से पाया जाता है; संचित अनुभव से कोई खोज संभव नहीं है। यदि आप पुराने के बोझ से दबे हैं तो आप नये का अन्वेषण कैसे कर सकते हैं?''

– 'प्रथम और अंतिम मुक्ति' पुस्तक से

याददाश्त ही है। समस्त परम्पराएं महज़ अतीत ही हैं। हम उनसे बुरी तरह चिपक जाते हैं, उन्हें सीख लेना चाहते हैं और सोचते हैं कि इसमें समय की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इसी तरह अन्य क्षेत्रों में भी होता है।

क्या कभी कोई यह पूछता भी है कि समय रुक सकता है? कुछ होने-बनने का समय, कुछ हासिल कर लेने का समय? क्या इसमें कुछ ऐसा है जो सीखा जा सकता है? या फिर हम इस भ्रान्तिक स्मरण की समस्त गतिविधि देख सकते हैं, जो इतनी वास्तविक भासती है; क्या इसे समाप्त किया जा सकता है? अगर समय रुक जाये तो इसका, यानी जो समय के परे है, उसके साथ क्या रिश्ता होगा जो मस्तिष्क में समस्त भौतिक गतिविधियों की याद के रूप में, ज्ञान के रूप में, निशानियों के रूप में या अनुभव के रूप में है...? इन दोनों के बीच क्या रिश्ता है? जैसा कि हम अक्सर कहते हैं, ज्ञान और विचार सीमित हैं। सीमित का असीमित से रिश्ता संभव नहीं है। पर असीमित का सीमित से किसी किस्म का संवाद संभव है यद्यपि वह संवाद हमेशा सीमित ही होगा, छोटा और खंडित।

कोई पूछ सकता है, अगर कोई व्यावसायिक बुद्धि का है तो, कि इस सबका आखिर क्या उपयोग है? असीमित का क्या उपयोग है और इससे मनुष्य को क्या लाभ है? हम हमेशा पुरस्कार चाहते हैं। हम पुरस्कार और सजा के सिद्धांत में जीते हैं, उस कुत्ते की तरह जिसे इस तरह प्रशिक्षित जाता है कि जब वह बात मानेगा उसे पुरस्कृत किया जायेगा। और इस मायने में हम लगभग उस जैसे ही हैं कि हमें अपने कार्यों और आज्ञाकारिता के लिए कुछ मिलना ही चाहिये। ऐसी मांग सीमित मस्तिष्क से ही पैदा होती है। मस्तिष्क विचारों का केंद्र है और विचार हमेशा, समस्त परिस्थितियों में सीमित होते हैं। हो सकता है यह कुछ असाधारण, सैद्धांतिक, कुछ बहुत बड़ा आविष्कार कर ले पर यह आविष्कार हमेशा सीमित होगा। इसीलिए इस असीमितता के अस्तित्व के लिए पूर्णतया मुक्त होना बहुत ज़रूरी है, संसार के दुखों, उठा-पटक और आत्म-केन्द्रित गतिविधि से मुक्त।

जो अपरिमेय है उसे शब्दों से नहीं मापा जा सकता। हम हमेशा अथाह को शब्दों और प्रतीकों के सांचे में रखने की कोशिश करते हैं। प्रतीक कभी वास्तविक नहीं होते पर हम हमेशा उन प्रतीकों की पूजा करते हैं इसीलिए हम हमेशा एक सीमित स्थिति में रहते हैं।

बादल इतने नीचे आ गये हैं कि पेड़ों की फुनगियों से लटक रहे हैं, सभी पक्षी ख़ामोशी से जैसे आंधी की प्रतीक्षा कर रहे हैं...यह एक खूबसूरत सुबह है, गंभीर होने के लिए, समस्त अस्तित्व पर सवाल उठाने के लिए, समस्त देवी-देवताओं और समस्त मानवीय कार्यकलापों पर। हमारा जीवन बहुत ही छोटा है और इस छोटी सी अवधि में मनस् के समूचे क्षेत्र के बारे में, जो कि स्मृति की ही गतिविधि है, सीखने जैसा कुछ है नहीं। हम बस उसे ध्यान से देख सकते हैं। देखना बगैर विचार के, देखना बगैर समय के, बगैर पुराने ज्ञान के, बगैर देखने वाले के जो अतीत का ही सार-संक्षेप है, सिर्फ़ देखना। बनते-बिगड़ते उन बादलों को देखना...उस वृक्ष को देखना...उस पंछी को। यह हमारे जीवन का भाग है। जब हम बेहद ध्यान से और लगन से देखते हैं तब वहां सीखने के लिए कुछ नहीं है, सिर्फ़ एक विशाल अन्तरिक्ष, मौन और शून्यता और प्रवाहित होती ऊर्जा।

- *'कृष्णमूर्ति टु हिमसेल्फ' से*

कृष्णमूर्ति : किसी भी मुकाम पर, पहला कदम ही आखिरी कदम है।

पुपुल जयकर : तो किसी भी बिन्दु पर समय को पोंछ डाला जा सकता है।

कृष्णमूर्ति : कोई भी जो कहे कि मैं इस पूरे सिलसिले के प्रति सजग हो जाऊँ और एक पल के लिए भी उसे पूरी तरह से प्रत्यक्ष बोध हो, 'पर्सीव' कर ले वह, तो वह मन उस पल के लिए फिर से युवा हो जायेगा। लेकिन मन उसे ही ढोने लगता है और तब फिर उसका क्षरण होने लगता है।

- *'ट्रेडिशन एंड रिवोल्यूशन' से*

बेचैन करने वाली यह गति क्या रुक सकती है?

''समुद्र का ज्वार-भाटा, और बहाव इंसानी क्रिया-प्रतिक्रिया की तरह है। हमारी क्रिया और प्रतिक्रिया बेहद तीव्र है। प्रतिक्रिया देने से पहले कहीं ठहराव नहीं है। एक सवाल रखा जाता है और हम तुरन्त, बिना देर किये, उत्तर ढूँढने की कोशिश करने लगते हैं; समस्या का हल ढूंढना। सवाल और जवाब के बीच कोई ठहराव नहीं है। आखिर तो हम ही जीवन के ज्वार और भाटा हैं, भीतर और बाहर। हम बाहर से एक रिश्ता बनाने की कोशिश करते हैं, यह सोचते हुए कि जो भीतरी है, वह बाहर से अलग है, जुड़ा हुआ नहीं है। पर यह तय है कि जो भी बाहर की गति है, वह भीतर का ही बहाव है। वे दोनों एक जैसे हैं, समन्दर के पानियों की तरह। यह लगातार बेचैन करने वाली भीतरी-बाहरी गति, इस चुनौती का उत्तर देना ही हमारा जीवन है। जब हम पहले बाहर से शुरूआत करते हैं, तब हमारा अन्दर हमारे बाहर का दास हो जाता है। हमने जो समाज बनाया है वह बाहरी है, और उस समाज के लिये हमारा अन्तर दास बन जाता है... और बाहरी के खिलाफ़ विद्रोह आंतरिक विद्रोह के ही समान है। क्या कभी यह निरंतर ज्वार-भाटा, बेचैनी, चिंता और डरावनी गति रुक सकती है?''

- 'कृष्णमूर्ति टु हिमसेल्फ' से

हिंदी में उपलब्ध जे. कृष्णमूर्ति की कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

ज्ञात से मुक्ति
प्रथम और अंतिम मुक्ति
हिंसा से परे
अंतिम वार्ताएं
शिक्षा एवं जीवन का तात्पर्य
स्कूलों के नाम पत्र
सुखी वही जो कुछ भी नहीं
ईश्वर क्या है?
आपको अपने जीवन में क्या करना है?
आज़ादी की खोज
प्रेम क्या है?
अकेलापन क्या है?
सत्य और यथार्थ
मन क्या है?
ये रिश्ते क्या हैं?
ध्यान
जीवन और मृत्यु
शिक्षा क्या है?
सोच क्या है?

पुस्तकें मंगाने एवं 'परिसंवाद' तथा 'स्वयं से संवाद' की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें :

द कृष्णमूर्ति सेंटर, कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया
राजघाट फोर्ट, वाराणसी 221 001
ईमेल : kcentrevns@gmail.com
फोन : 0542-2441289

''मेरी किसी पक्षी पर नज़र पड़ती है, पर मैं कभी उसे देखता ही नहीं, बस मुझमें विचार मँडराते रहते हैं-तो अब मैं उस पक्षी को देखने वाला हूँ, इसमें मुझे पल-दो-पल लग सकते हैं, पर मैं उसे देखने जा रहा हूँ। और जब मुझे चलना होगा, तो मेरा ध्यान चलने पर होगा। ताकि अनवधान में से, बिना किसी प्रयास के, पूर्ण अवधान वजूद में आए।''

-'सत्य और यथार्थ' पुस्तक से

'स्वयं से संवाद'
कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया
राजघाट फोर्ट, वाराणसी 221 001
ईमेल : kcentrevns@gmail.com
फोन : 0542-2441289

संपादक : मुकेश
अनुवाद : जया जादवानी

'कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया' के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. पी. कृष्णा द्वारा सत्तनाम प्रिंटिंग प्रेस, एस-1/208 के-1 नयी बस्ती, पांडेयपुर, वाराणसी 221 002 से मुद्रित एवं कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, राजघाट फोर्ट, वाराणसी 221 001 (उ. प्र.) से प्रकाशित। संपादक : मुकेश